उन्नीसवां अंक मिला। इस अंक का मुखपृष्ठ बहुत ही सुंदर और आकर्षक लगा। मेरे कुछ दोस्त तो मानने को तैयार नहीं हैं कि यह फोटो वास्तविक है। एच. जी. वेल्स की कहानी 'वह आदमी जो चमत्कार कर सकता था' बहुत अच्छी लगी। वेल्स की कुछ कथाओं पर फिल्म भी बन चुकी है। यदि हो सके तो 'द टाइम मशीन' का अनुवाद प्रकाशित करें। यह भी वेल्स की ही लिखी हुई है।

अजय शर्मा के लेख में 'वेन. डी. ग्राफ' मज़ेदार लगा। 'पलकों का नज़ारा और चूहे' भी पढ़ा। सवालीराम में बादलों पर गुरुत्व का प्रभाव दो बार पढ़ने पर ही समझ सका।

पवन गुप्ता,
इदौर, मध्य प्रदेश।

सितम्बर-अक्टूबर अंक काफी रोचक लगा। मैं आपकी दोनों पत्रिकाओं – 'संदर्भ' और 'चकमक' से अपने छात्रों को परिचित कराता रहता हूं। वे प्रभावित होते हैं। परन्तु. . . मुख्य बात यह है कि यह कस्बा पत्र-पत्रिकाओं पर खर्च बेमानी मानता है। शिक्षा की ओर ध्यान कम है। वह चाहता क्या है पता नहीं।

अभय कृष्ण गुप्ता,
श्री नेहरू बाल वाटिका
नोहर, राजस्थान।

उपहार स्वरूप भेजा गया 19वां अंक मुझे मिल गया है। पिछले दिनों चकमक के एक अंक में मेरा पत्र छपा और अब संदर्भ के इस अंक में। धन्यवाद।

ये अंक तो पूरा विज्ञान को समर्पित है। शिक्षा की कमी के कारण तथ्य की गहराई में नहीं जा पाता परंतु बातें समझ में आती हैं। 'आपने लिखा' पढ़कर महसूस होता है कि पत्रिका दूरदराज़ तक जाती है।

पेड़-पौधों. . ., सवालीराम, पलकों का. . ., बिजली के . . ., पर्यावरण. . ., मांसपेशियां आदि सभी लेख नए व शोधपूर्ण लगे। पलकों का नज़ारा. . . लेख में जो सच्चाई पेश की गई है उसे सभी को मान लेना चाहिए। कहानी 'चमत्कार' भी अपने आप में एक अजूबा लगी।

पावरझंडा के स्कूलों के बारे में जानकर दुख हुआ। मुखपृष्ठ पर बादलों को लाल-काला-पीला दर्शाकर आपने मन मोह लिया।

राजकुमार गुप्ता
नाशिक रोड, बंदीशाला
नाशिक, महाराष्ट्र।

प्रोफेसर यशपाल ने 18वें अंक में छपे लेख 'स्कूल के सवाल ज़िंदगी के सवालों से अलग क्यों हैं?' में काफी अच्छा विवेचन किया है।

प्रोफेसर यशपाल के अनुसार कई शिक्षक महत्वपूर्ण ज़रूरी सवालों को टाल जाते हैं। परंतु मैं सौभाग्यशाली हूं कि मुझे ऐसे शिक्षक मिले हैं जो सामाजिक सवालों के सटीक जवाब देते हैं।

विवेक प्रकाश के नींद से संबंधित लेख में बहुत ही रोचक जानकारियां मिलीं। इसी लेख में दी गई जानकारी – बोरिस परशे का लॉलीपॉप – रुचिकर लगा।

नरेश रणसूरमा, दसवीं
सरस्वती विद्या मंदिर,
हरदा, मध्य प्रदेश।

'संदर्भ' से मेरा परिचय एक मित्र के घर पर आई उपहार पत्रिका के रूप में हुआ। मैं उसे पूर्ण पढ़ने का लोभ संवरण न कर सका। मैंने तुरंत उसका वार्षिक चंदा भेजा और शेष अंक सजिल्द मंगवा लिए।

संदर्भ में दिए गए विभिन्न लेख काफी विस्तारित रूप से और आसान भाषा में समझाए गए हैं। लेख सारगर्भित एवं मनन योग्य हैं।

संदर्भ में एक कमी नज़र आती है – उसकी लेटलतीफी। मालूम पड़ा कि इस दिशा में आप प्रयास कर रहे हैं। परंतु अंक हाथ में आते ही सारी बातें भूलकर अंक समाप्त करने की इच्छा होती है।

विलास (विकास)
देवास, मध्यप्रदेश।

तारीखों में गलतियां

जुलाई-अगस्त की संदर्भ पढ़ी। देखकर शिकायत करने की इच्छा हुई। मेढक के अण्डे से मेंढक बनने के जो चित्र छपे है उसमें त्रुटियां हैं।

मेरा विषय विज्ञान नहीं है किन्तु मैं यह प्रयोग हर वर्ष करती हूं। लेख में चित्रों के साथ जो तारीख दी गई हैं वे गलत हैं। इतनी जल्दी न तो गलफड़े गायब होते हैं, न ही पीछे के पैर आने के दो दिन बाद आगे के पैर आते हैं और न ही एक दिन बाद पूंछ गायब हो जाती है। इसमें पूरे 45 दिन लगते हैं। अण्डे से पूर्ण मेंढक बनने में यदि बच्चों ने चित्र बनाए हैं तो कोई बात नहीं, पर तारीख ठीक करवा देना था।

मालती महोदय, शिक्षिका
धार, मध्य प्रदेश।